कूमत से 
अधिक गांड 
कैसे प्राप्त करें?

एच.ए. खान

2012

केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान 
( भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ) 
जोधपुर 342 003, राजस्थान
निश्चित सांद्रता का इथिफोन जोड़काज जोधपुर के विभाग द्वितीय के फारेस्ट्री सेवक नन्द ने 10 रुपये प्रति 4 मिली. (एक पेड़ के उपचार हेतु) की दर से प्राप्त किया जा सकता है। यह तकनीकी किसान भाइयों में बहुत लोकप्रिय है इस तकनीकी के प्रचलन से किसानों में कूमट की पौध लगाने की बांग कई गुना बढ़ गई है जिससे न केवल किसान भाई स्वयं लाभान्वित हो रहे हैं अपितु मरुक्षेत्र का अधिक से अधिक इलाका वनस्पति की परिभाषित में आ रहा है। राजस्थान सरकार द्वारा भी इस तकनीकी को किसानों द्वारा अपनाने के लिए समुचित प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

(1) कूमट के पेड़ के तने में समुचित ऊबाई पर गिरित से छेद करना।
(2) पेड़ के तने में बनाये गये छेद में गोद उत्प्रेरक (इथिफोन) घोल सिरिज्ज द्वारा डालना।

(3) गोद उत्प्रेरक घोल डालने के पश्चात छेद को साफ की हुई विकली मिट्टी से बन्द करना।

(4) उपचारित कूट के पेड़ पर लगा हुआ गोद

प्रकाशक: निदेशक, केंद्रीय झूठ क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर 342 003
संपर्क नंबर: +91-291-2786584 (कार्यालय) 
+91-291-2788484 (निवास), फौज: +91-291-2788706
ईमेल: director@cazri.res.in
वेबसाइट: http://www.cazri.res.in
सम्पादन: एम.पी. सिंह, आर.एस. जिराती, श्री.के. माधुर
समिति: एम.पी. राजौरा एवं एस. रोय
काजरी किसान हेल्प लाईन: 0291-2786812
कूमट (अकणिया सेनिगल) नर प्रदेश में पाया जाने वाला जाना-माना बढ़ौटपयोगी वृक्ष है। कूमट की फली एवं इसके बीज का भोजन में स्वादिष्ट रूप से उपयोग किया जाता है। इसके पत्ते पशुओं के लिए चारे के रूप में काम आते हैं एवं इसकी तकड़ी का उपयोग ईंधन के अतिरिक्त कृषि उपयोगी यथा हर्बलों आदि के बनाने के काम में किया जाता है। कूमट की शाखाओं घनी एवं काटौंदार होती है। इसीलिए इसको खेतों के चारों ओर बांध की तरह लगाने से फसल की सुरक्षा होती है।

कूमट, आयुष्यी गुणों से युक्त बहुमूल्य गोद गम-अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण स्रोत है। हमारे देश में कूमट के पेड़ राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं हरियाणा के शुष्क क्षेत्रों में बहुतायत में पाये जाते हैं। परन्तु प्राकृतिक रूप से इन पेड़ों से गोद बहुत कम मात्रा में ही प्राप्त होता है। जबकि सूदान इस गोद का मुख्य निर्यातक देश है।

कूमट से प्राप्त होने वाला यह गोद औद्योगिक उद्योगों के अतिरिक्त, कपड़ा, कागज, चर्चना-निर्यात, सौंदर्य सामग्री, खाद्य पदार्थ इत्यादि उद्योगों में भी प्रतुर मात्रा में उपयोग किया जाता है। इसी कारण विभिन्न उद्योगों में उपयोग के लिए प्रतिवर्ष इस गोद का भारी मात्रा में आयात किया जाता है। यही कारण है कि कूमट के पेड़ों से अधिक मात्रा में गोद प्राप्त करने की दिशा में काजरी, जोधपुर में अनुसंधान किया गया है एवं कूमट से अधिक मात्रा में गोद प्राप्त करने की तकनीकी विकसित की गई है।

इस तकनीकी में कूमट के पेड़ के तने में लगभग 1.5 से.मी. व्यास एवं 5 से.मी. गहराई का एक लिंगछाय छेद किया जाता है। इसमें निश्चित सांद्रता वाला गोद उत्पारक (इथिफोन) घोल (780 मिग्राम। संक्रिय तत्व 4 मिग्राम। घोल में) डाल दिया जाता है तथा छेद को साफ की हुई चिकनी मिटटी से बन्द कर दिया जाता है। इसके
पश्चात वातावरण, मृदा स्थिति, एवं वृक्ष के सामान्य स्वास्थ्य के आधार पर कुछ ही दिनों में पेड़ के विभिन्न भागों से गोद का रिसाव आरम्भ हो जाता है। लगभग एक माह बाद जब पेड़ पर निकला हुआ गोद सूखा जाता है तब उसे इकट्ठा कर लिया जाता है। प्रायः गोद को दो से तीन बार इकट्ठा किया जा सकता है। उपचारित कूमट के पेड़ों से औसतन 500 ग्राम गोद, प्रति पेड़, प्राप्त किया जा सकता है। प्रदीप किसी पेड़ से 1 किलो या उससे भी अधिक मात्रा में गोद मिल सकता है परंतु किसी पेड़ से बहुत कम 100, या 200 ग्राम या किसी पेड़ से कुछ भी नहीं। इस प्रकार से उपचारित पेड़ों से प्राप्त गोद 'फार्मकोपिया आफ़ इप्डिया' में वर्णित इप्डियन गम के मानकों के अनुरूप पाया गया है। कूमट से अधिक मात्रा में गोद उत्पादन की तकनीकी के मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं:

### कूमट के पेड़ों को उपचारित करने की विधि

कूमट से अधिक मात्रा में गोद प्राप्त करने की तकनीकी बहुत ही साधारण है। इस तकनीकी में कूमट के पेड़ के तने में समुचित ऊँचाई पर गिराम से लागभग 1.5 से.मी. व्यास एवं 5 से.मी. गहराई का नीचे की ओर झुका हुआ एक तिरछा छेद किया जाता है। इस छेद में प्लास्टिक की सिरिज से निर्मित साँड्रता का 4 मिली. गोद उत्प्रेक्ष (इप्डिफोन) घोल डाल दिया जाता है। तत्पश्चात छेद को साफ़ की हुई चिकनी मिट्टी से बन्द कर दिया जाता है। इसके उपरान्त पेड़ पर कहीं भी किसी तरह का घाव नहीं किया जाता है। यदि पर्यावरणीय परिस्थितियाँ अनुकूल हों तो शीघ्र ही चार या पाँच दिनों में उपचारित पेड़ों पर जगह-जगह से गोद का रिसाव आरम्भ हो जाता है (चित्र 1-4)। जब गोद सूखा जाता है और कड़ा हो जाता है तब इसे इकट्ठा कर लिया जाता है। एक बार गोद एकज रन करने के पश्चात उपचारित पेड़ पर
कुछ ही दिनों में पुनः गोद आने लगता है। इस प्रकार उपचारित पेड़ से दो या तीन बार गोद इकट्ठा किया जा सकता है।

पेड़ों के उपचार का उपयुक्त समय

अधिक गोद उत्पादन के लिए कूमट के पेड़ों को उपचारित करने का उपयुक्त समय वह है जब पेड़ों से पत्तियां सूख कर मिर जाये और पेड़ ठूलौ की तरह दिखने लगे। यह समय पशुसमी राजस्थान में फरवरी के अंतिम सप्ताह से प्रारंभ होकर मई या जून के महीने तक हो सकता है। पशुहारी दृष्टि से अधिक तापक्रम एवं सूखा मोसम अधिक गोद प्राप्त करने में सहायक होते हैं।

पेड़ों से गोद कैसे इकट्ठा करे?

पेड़ों पर तैयार गोद को एक उचित लम्बाई के बांस की सहायता से धीरे से धक्का लगाकर एवं पेड़ के नीचे बढ़ा कपड़ा आदि बिचारक आसानी से इकट्ठा कर लिया जाता है। इस विधि से स्वयं का कूमट के काटों से बचाव भी हो जाता है और गोद जन्मने की मिट्टी एवं अन्य कूड़ा-करकट से सुरक्षित भी रहता है।

निश्चय ही कूमट से अधिक मात्रा में गोद प्राप्त करना पशुसमी राजस्थान के किसानों के लिए एक अच्छी अतिरिक्त आमदनी का साधन है। इसके न केवल श्रेणी ग्रामीणों की आर्थिक दशा में सुधार होगा अपितु केंद्रीय लोग इस बहुउपयोगी वृद्धि के संरक्षण एवं इसकी पेड़वार बढाने के लिये भी प्रेरित होंगे। फलतः नये-नये केंद्र तथा मुख्य रूप से वह केंद्र जो कृषि योग्य नहीं है। दृष्टि की परिपूर्णता में आएगे जिसमें पर्यावरण सुरक्षा के दिशा में भी योगदान होगा। अधिक मात्रा में गोद उत्पादन से अब तक आयात किये जाने वाले बहुमूल्य गोद ‘गम-अरेबिक’ में न केवल हमारा देश आत्मनिर्भर हो सकता है अपितु अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर ‘गम-अरेबिक’ की मांग को देखते हुए अतिरिक्त गोद विदेशों को निर्यात भी किया जा सकता है।